Universe Journal of Education & Humanities ISSN 2348-3067
Volume-5, No. I, Feb.-2018, pp.Hin.-11-13

सामाजिक विकास में नैतिक शिक्षा की प्रासंगिकता: सन्त कबीर के सन्दर्भ में

मिस. शगुफ्ता जाफरी, शोध छात्रा,
जे.आर.एफ. (I.C.P.R.)
डी.ए.वी. (पी.जी.) कालेज कानपुर, उत्तर–प्रदेश भारत।

समाज के निर्माण में विद्यार्थियों की प्रमुख भूमिका रहती है। विद्यार्थी ही भावी नागरिक, भावी समाजसेवी एवम् भावी देशभक्त बनता है। समाज निर्माण में विद्यार्थी आवश्यक तत्त्व है, क्योंकि विद्यार्थी ही समाज की आधारशिला है। वर्तमान में शिक्षा विद्यार्थियों की नैतिक एवम् चारित्रिक उन्नति पर बल न दे कर एक भिन्न स्वरूप पर बल दे रहा है जिसमें विद्यार्थी प्रतियोगिता की दौड़ में शिक्षा को एक बोझ की तरह ढो रहा है। ऐसी स्थिति में नैतिक उन्नति के स्थान पर नैतिक पतन होता है। यही वर्तमान शिक्षा की प्रमुख कमी है। शिक्षा में व्याप्त इस कमी को दूर करने के लिए प्राचीनकाल की शिक्षा तथा विभिन्न महापुरूषों द्वारा बताई गयी शिक्षा को अपनाना होगा जो विद्यार्थी के सर्वांग विकास पर बल देती है। जिसमें विद्यार्थी के उत्तम गुणों के विकास पर बल दिया गया है। एक श्रेष्ठ समाज की स्थापना तभी हो सकती है जब उसमें रहने वाले नागरिक श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त होंगे तथा श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण तभी हो सकता है जब विद्यार्थी को ज्ञानार्जित करने के साथ–साथ श्रेष्ठ आचरण अपनाने पर बल दिया जाय। आदर्श एवम् मूल्यों पर बल देने से विद्यार्थी साक्षर होने के साथ–साथ सुसंस्कारित भी हो जाता है। ऐसा विद्यार्थी विद्योपार्जन के उपरान्त अपने सद्व्यवहार से परोपकार पूर्ण जीवनयापन करता है तथा आत्मवत् सर्वभूतेषु को अपनाते हुए समाज में एक श्रेष्ठ नागरिक सिद्ध होता है।

वर्तमान समाज में दुराचरण, स्वार्थता तथा परपीड़ा प्रेम की भावना बढ़ती जा रही है। जो एक गम्भीर चिन्ता का विषय है। हमें इस विषय पर चिन्तन करना है कि शिक्षा में ऐसी क्या कमी है जो श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण होने के स्थान पर स्वार्थी, मूल्यहीन तथा विवेकहीन नागरिकों का निर्माण हो रहा है। हमें शिक्षा प्रणाली को पुनः संशोधित करके ऐसी शिक्षा व्यवस्था की प्रतिष्ठा करने का प्रयास करना है जिसमें श्रेष्ठ तथा सच्चरित्र नागरिक तैयार हों। इस प्रयास हेतु यह आवश्यक है कि शैक्षिक प्रणाली में जो कमियाँ हो उन्हें दूर किया जाय तथा ऐसी शैक्षिक प्रणाली का विकास हो जिसमें मानव में मानवता तथा आत्मवत सर्वभूतेषु की भावना जागृत हो।

वर्तमान शैक्षिक स्थिति की बात की जाय तो शिक्षा आज पतन की ओर उन्मुख हो रही है, इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा में चारित्रिक मूल्यों का समावेश किया जाय। वर्तमान में विद्यार्थी मूल्यहीनता की ओर बढ़ रहे हैं। इसका कारण शिक्षा में दार्शनिकता का अभाव है। भारतीय दार्शनिकों तथा विभिन्न महापुरूषों ने प्राचीनकाल से लेकर अब तक मनुष्य के चारित्रिक विकास पर बल दिया ताकि श्रेष्ठ मनुष्यों का निर्माण हो सके क्योंकि श्रेष्ठ मनुष्यों से श्रेष्ठ समाज निर्मित होता है। इस सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों तथा महापुरूषों के विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध है। प्रस्तुत शोध आलेख में सन्त कबीर के विचारों को प्रस्तुत किया गया है, तथा यह भी प्रस्तुत किया गया है कि कबीर के विचार वर्तमान शिक्षा के सुधार हेतु कहाँ तक उपयोगी तथा प्रासंगिक हैं।

शिक्षा को मूल्योपयागी बनाने के लिए आचार्य शंकर ने अद्वैतवादी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। वह आदर्श मूलक शिक्षा पर बल देते हैं। उनके अनुसार मानव जीवन का अन्तिम उद्देश्य परमपुरूषार्थ की प्राप्ति अथवा मोक्ष है। इस मोक्ष हेतु वह ज्ञान मार्ग का समर्थन करते हैं। वह मानते हैं कि जब मनुष्य को ज्ञान हो जाता है कि ब्रह्म सत्य है तथा शेष सभी कुछ असत्य है तब वह सांसारिक माया मोह से मुक्त होता है। भेद दृष्टि से मुक्त हो जाता है तथा स्वयं में सबको देखता है। यह ज्ञान शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त होता है। उनके विचार में–**स "ब्रह्म विद्यां सर्व विद्या प्रतिष्ठाम्"**[1] अर्थात् सम्पूर्ण विद्याओं में ब्रह्म विद्या सर्वश्रेष्ठ है। यही कारण है कि वह उस विद्या को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं जो मुक्ति में सहायक हो **"या विद्या सा विमुक्तये"**[2] इसी प्रकार सन्त कबीर के विचारों में अद्वैतवाद के समान ज्ञान मार्ग का समर्थन प्राप्त होता है। वह कहते हैं कि जब ज्ञान रूपी आँधी आती है तब भ्रम पूर्णतः नष्ट हो जाता है तथा मोक्ष प्राप्ति होती है। उनके अनुसार–

संतौ भाई आई ग्यांन की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ानी माया रहै न बांधी।।[3]

अतः ज्ञान रूपी या ब्रह्म ज्ञान रूपी आँधी से सांसारिक

Scanned by CamScanner

भ्रम जिसे माया ने बॉध रखा था वह दूर हो जाता है। जीवात्मा जो अविद्या से दूषित थी ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति से अविद्या से मुक्त होकर अपने शुद्ध स्वरूप में अवस्थित हो जाती है। कबीर के अनुसार आत्मज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि आत्मज्ञान ही ब्रह्म ज्ञान है। मनुष्य के घट में परमात्मा का वास है, लेकिन मनुष्य उसे बाह्य कर्मकाण्ड में ढूढता है–

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूढ़े बन माहि।
ऐसे घटि घटि रांम है, दुनिया देखै नांहि।।[4]

अतः कबीर ने शिक्षा का साधन ब्रह्म ज्ञान या आत्मज्ञान को माना। आचार्य शंकर के अनुसार शिक्षा व्यक्ति की ज्ञान प्राप्ति का साधन है। जिसे वह ब्रह्म ज्ञान, आत्मज्ञान या आत्म विद्या कहते है। वह ज्ञान प्राप्ति हेतु अपरा तथा परा विद्या की प्राप्ति पर बल देते हैं। आचार्य के अनुसार **"अपरा विद्या वेद व्याकरण, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष आदि शास्त्रों का व्यावहारिक ज्ञान है, परा विद्या वह है जिससे अक्षर ब्रह्म का बोध होता है।"**[5] अतः शिक्षा वह है जिससे सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान ब्रह्म का ज्ञान हो। आचार्य शंकर तथा सन्त कबीर दोनों इस सम्बन्ध में एक मत रखते हैं।

शिक्षा मानव की एक विशेष उपलब्धि है, क्योंकि मानव जीवन में चिन्तन, मनन एवम् विवेक जितना महत्वपूर्ण हैं उतना कुछ भी नहीं। मानव का निर्माण ईश्वर द्वारा इस प्रकार किया गया है कि वह नयी–नयी खोज करता हुआ नित्य कुछ न कुछ सीखता रहता है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक वह कुछ न कुछ सीखता रहता है।

वर्तमान शिक्षा में सबसे बड़ी कमी यह है कि गुरु – शिष्य के मध्य मधुर सम्बन्धों का अभाव है। इसका एकमात्र कारण यही है कि शिक्षा से नैतिकता दूर हो गयी है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा से नैतिकता को जोड़ा जाय तभी श्रेष्ठ एवम् उच्चादर्श से सम्पन्न नागरिकों का निर्माण होगा और श्रेष्ठ नागरिकों से श्रेष्ठ समाज का निर्माण होगा। इस सन्दर्भ में सन्त कबीर के विचार अत्यन्त उपयोगी हैं। उन्होंने नैतिक उन्नति के लिए पवित्र आचरण पर बल दिया। वह शिष्य का गुरु के प्रति आदर भाव का समर्थन करते हुए कहते हैं कि–

सतुगुरु सवाँन को सगा, सोधी सई न दाति।
हरि जी सवाँन को हितू, हरिजन सई न जाति।।[6]

अर्थात् सतगुरु के समान कोई सगा नहीं होता, शुद्धि के समान कोई पवित्रता नहीं, ईश्वर के जैसा कोई कल्याणकारी नहीं है तथा ईश्वर भक्त की तुलना में कोई दूसरी जाति नहीं है। अतः वह गुरु को सर्वाधिक महत्व देते हैं क्योंकि गुरु ही शिष्य का सबसे बड़ा हितैषी है। गुरु कृपा से आत्मा निर्मल होती है तथा गुरु ही ब्रह्म से पूर्ण परिचय करवाता है।

गुरु हमारी नैतिक शुद्धि हेतु मार्गदर्शक का कार्य करता है। उनके अनुसार –**गुरु ने उस पूर्ण ब्रह्म से परिचय करा दिया है फलस्वरूप वह सदा हमारे भीतर विराजमान रहता है। एक क्षण को भी हटता नहीं अतः मेरी आत्मा निर्मल हो गयी है अब मुझे कोई दुःख नहीं है अर्थात् सांसारिक सुख दुःख का बोध नहीं रह गया।"**[7] शिक्षा में गुरु ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्ध है क्योंकि वही हमें सही मार्गदर्शन दे कर नैतिक एवम् चारित्रिक विकास कर सकता है। एक सभ्य मनुष्य के लिए नैतिक एवम् चारित्रिक गुणों का होना अत्यावश्यक है, और यह शिक्षा गुरु के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है। विभिन्न नैतिक गुणों से युक्त व्यक्ति समाज में तो सम्मान पाता ही है साथ ही साथ पारलौकिक सुख एवम् आनन्द को भी प्राप्त करता है। शिक्षा की प्रक्रिया केवल शिक्षक तथा शिक्षार्थी के मध्य होने वाली अन्तःक्रिया है। **"गुरु शिष्य के अज्ञान का आवरण हटा कर उसे ज्ञान की प्राप्ति कराता है और शिष्य अपने प्रयासों से गुरु से ज्ञानोपर्जन कर अपने जीवन के परम लक्ष्य मुक्ति को प्राप्त करता है।"**[8] यही कारण है कि कबीर ने श्रेष्ठ गुरु को खोजने की बात की है, क्योंकि भव सागर से पार होने के लिए श्रेष्ठ गुरु मिलना अत्यन्त आवश्यक है।

गुरु ही शिष्य का मार्गदर्शन करता है, गुरु के ज्ञान से ही शिष्य में प्रेम, प्रीति तथा स्नेह रूपी गुणों का समावेश होता है। ऐसे उच्च गुणों के विकास से समाज में व्याप्त स्वार्थ हिंसा तथा वैमनस्यता आदि दुर्गुणों का नाश होगा तथा समाज में लोक कल्याण की भावना का समावेश होगा जिससे एक स्वस्थ सामाजिक वातावरण का निर्माण होगा। जब गुरु द्वारा शिष्य को ऐसी उच्चादर्श सम्पन्न शिक्षा दी जाएगी तो अवश्य ही समाज में ऊँच–नीच का भेद भी समाप्त होगा और प्रेम रूपी शिक्षा देने के कारण ही स्वामी एवम् सेवक दोनों परस्पर स्नेह तथा समर्पण भाव से रहेंगे। इस सम्बन्ध में कबीर कहते हैं कि–

स्वामी सेवक एक मत मन ही मैं मिलि जाइ।
चतुराई रीझै नहीं रीझै मन कै भाई।।"[9]

कबीर के अनुसार गुरु ऐसा होना चाहिए जो मनुष्य की दुर्बलताओं को पहचान कर उन्हें दूर करें तथा उसे सत्पथ पर लगाए। इसके लिए यह आवश्यक है कि मार्गदर्शक का मन भी निर्मल हो, यदि मार्गदर्शक के मन में ही कुटिलता होगी तो वह श्रेष्ठ आचरण की शिक्षा दे ही नहीं सकता। ऐसे गुरु के सान्निध्य में रहने से शिष्य पथ भ्रष्ट होंगे।

गुरु का महत्व बताते हुए कबीर कहते हैं कि–**उसी के प्रसाद उसी की कृपा से मनुष्य का मन निर्मल**

Scanned by CamScanner

होता है और वही ईश्वर की कृपा का अधिकारी बनाता है। गुरु सिकलीगर (कलई करने वाला) सदृश है, जो साधक के देह (ईश्वर मन) को सबद (ब्रह्मज्ञान) से कलुष रहित करता है। मन की कालिमा अथवा उसके विकारों को मिटाता है। जैसे दर्पण बनाने वाला शीशे को दर्पण बनाने के लिए मसकला (मसाला) लगाता है वैसे ही गुरु की कृपा से शिष्य का मन निर्मल होता है।[10] वह मन की निर्मलता के लिए क्रोध का त्याग, सहनशीलता, धीरता, अहंकार का त्याग, परोपकार, क्षमा भाव, दुर्वचनों का त्याग, दया, समत्व का भाव आदि का समर्थन करते हैं। वह सच्चे भक्त की पहचान धीरता और सहनशीलता बताते हुए कहते हैं–

खूंदन तौ धरती सहै, बाढ़ सहै बनराई।
कुसबद तौ हरिजन सहै, दूजै सह्या न जाई।।[11]

जैसे पृथ्वी सबके रोदने को सहती है, वृक्ष कुल्हाड़ी से काटा जाना सहता है उसी प्रकार जिसका मन निर्मल होता है वह निर्मल हरिभक्त दुर्वचनों को सहता है। जो अपने मन को वश में रखता है वह दुर्वचनों का उत्तर नहीं देता है प्रत्युत वह परोपकार तथा लोक कल्याण करता है। ऐसा करने से दुर्जनों के व्यवहार में परिवर्तन आता है तथा उसे अपने व्यवहार पर पछतावा होता है। किन्तु जब दुर्वचनों का उत्तर दुर्वचन से दिया जाता है तब छोटी सी बात भी बड़े–बड़े झगड़ों में बदल जाती है। परिणामस्वरूप हिंसा, द्वेष वैमनस्यता के कारण सामाजिक वातावरण दूषित होता है। यही कारण है कि शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश होना चाहिए क्योंकि नैतिक मूल्य चरित्र निर्माण मे सहायक होते है। महात्मा गाँधी ने शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण बताया है उसके शब्दों में–"**समस्त ज्ञान (शिक्षा) का उद्देश्य चरित्र का निर्माण होना चाहिए।**"[12] शिक्षा में नैतिक मूल्यों का होना अत्यावश्यक सिद्ध होता है।

वस्तुतः सन्त कबीर स्वयं पढ़े लिखे नहीं थे किन्तु फिर भी उनके सामाजिक विचार अत्यन्त उपयोगी है। उन्होंने सामाजिक विषमताओं का गहन अध्ययन किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि समस्त विषमताओं का कारण नैतिक मूल्यों का अभाव है। यही कारण है कि उन्होंने मानव के चारित्रिक विकास पर बल दिया।

अतः समाज को उच्चादर्श से सम्पन्न बनाने के लिए तथा सामाजिक उन्नति के लिए शिक्षा में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना करना अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान में सन्त कबीर द्वारा बताए गए नैतिक एवम् चारित्रिक विकास के उपायों को अपनाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। हमें शिक्षा के अन्तर्गत नैतिक विचारों का समावेश करना है, तभी सामाजिक उन्नति हो सकती है, क्योंकि शिक्षा से ही श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण होता है तथा नैतिकता के अभाव मे श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण नहीं हो सकता। अतः वर्तमान शिक्षा में कबीर द्वारा बताए गए नैतिक मूल्य एवम् चारित्रिक विकास के उपायों को अपनाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। हमें शिक्षा के अन्तर्गत नैतिक विचारों का समावेश करना है, तभी सामाजिक उन्नति हो सकती है, क्योंकि शिक्षा से ही श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण होता है तथा नैतिकता के अभाव में श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण नहीं हो सकता।

अतः वर्तमान शिक्षा में कबीर द्वारा बताए गए नैतिक मूल्य अत्यन्त प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। नैतिक मूल्यों से युक्त मनुष्य प्रेम, सहानुभूति, दया, अहिंसा, समर्पण का भाव तथा लोक कल्याण आदि गुणों के कारण समाज के प्रत्येक क्षेत्र में सम्मान पाता है और जब शिक्षा के माध्यम से सभी मनुष्य उपरोक्त गुणों से युक्त होंगे तो अवश्य ही स्वस्थ सामजिक वातावरण विकसित होगा।

संदर्भ सूची

- मुण्डकोपनिषद्–1–2–12
- ब्रह्मसूत्र शा0 भा0 (1–1–1–1)
- कबीर ग्रन्थावली, पदावली, पद–16
- कबीर ग्रन्थावली साखी, कस्तूरी मृग कौ अंग–1
- तत्रापरा, ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरूक्तं छन्दोज्योतिषमिति। अथपरा यया तदक्षरमधिगम्यर्ते। (मुण्डकोपनिषद्–1–5)
- कबीर ग्रन्थावली, साखी गुरुदेव कौ अंग–1
- कबीर ग्रन्थावली साखी गुरुदेव कौ अंग–35
- छान्दोग्योपनिषद्–6/4/2 पर शांकर भाष्य तथा शर्मा भीष्मदत्त, महान शिक्षा दार्शनिक के रूप में आद्य गुरु शंकराचार्य पृ0 178–179
- कबीर ग्रन्थावली, साखी, हेत प्रीति सनेह कौ अंग, –4/652
- कबीर ग्रन्थावली साखी सबद कौ अंग–3
- कबीर ग्रन्थावली, साखी, कुसबद कौ अंग–2
- महात्मा गाँधी, नव जीवन पृ0 107

Scanned by CamScanner